

## कजरी तीज व्रत कथा PDF

किसी नगर में एक सेठ सेठानी थे। उसके पास बहुत सारा धन था लेकिन उसकी कोई संतान नहीं थी। भाद्रपद में कजली तीज माता का व्रत आया, पूजा करने के बाद सेठानी ने तीज माता से कहा- हे नीमड़ी माता तीज माता! यदि नौवें महीने में मेरे पुत्र होगा तो मैं तेरे प्रभु को सत्तू चढ़ाऊंगी। और तीज माता की कृपा से नौवें महीने में उसने एक पुत्र को जन्म दिया। लेकिन सेठानी नीमड़ी माता को सत्तू का भोग लगाना भूल गई। सेठानी के सात बेटे थे लेकिन सेठानी तीज माता को सत्तू नहीं चढ़ाती थी।

पहला पुत्र विवाह योग्य हो गया। लड़के की शादी हो गई और शादी की रात आधी रात को सांप ने काट लिया और उसी वक्त उसकी मौत हो गई। दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे बेटे की भी शादी की रात सांप के काटने से मौत हो गई। जब सातवें बेटे की सगाई नजदीक आई तो सेठ सेठानी ने मना कर दिया।

गांव वालों के काफी समझाने के बाद सेठ सेठानी शादी के लिए राजी हुए। तब सेठानी ने कहा कि उसकी सगाई कहीं दूर कर देनी चाहिए। सेठजी सगाई के लिए घर से निकले और रास्ते में बहुत दूर एक गाँव आया। कुछ लड़कियाँ वहाँ खेल रही थीं और मिट्टी के घर बना रही थीं और सभी ने अपने घर तोड़ दिए लेकिन लड़की ने कहा कि वह अपना घर नहीं तोड़ेगी। सेठ वहीं खड़ा यह सब देख रहा था और सोचा कि यह लड़की तो बुद्धिमान है।

जब लड़की खेलकर घर जाने लगी तो सेठ भी उसके पीछे-पीछे उसके घर तक चला गया। उन्होंने लड़की के माता-पिता से मुलाकात की और अपने बेटे की सगाई कर दी और शादी के लिए समय भी ले लिया।

घर आकर वह शादी की तैयारी करने लगा। सेठ परिवार और गांव वालों के साथ बारात लेकर गया और सातवें बेटे की शादी हो गई। बारात चली गई,

रास्ता लम्बा था, माँ ने लड़की से कहा कि रास्ते में तीज माता का व्रत होगा, वह सत्तू और सिंगा डाल रही है। रास्ते में नीमड़ी माता की विधिपूर्वक पूजा करना और कल्पना अपने ससुर को देना। धूमधाम से बारात निकली और रास्ते में तीज का दिन आ गया। ससुर ने बहू से भोजन करने को कहा तो बहू ने कहा कि आज मेरा कजली [सातुरी] तीज का व्रत है। शाम को बहू ने गाड़ी रोकी और कहा कि मुझे तीज माता की पूजा करनी है।

तभी ससुर ने नीमड़ी का पेड़ देखकर गाड़ी रोकी और कहा, "बहू, पूजा कर लो।" तब बहू ने कहा- निमड़ी की डाली ले आओ। तब ससुर ने कहा, सभी बहुओं ने निमड़ी के पेड़ की पूजा की, लेकिन बहुएं नहीं मानीं। उन्होंने कहा, "मैं तो शाखा की ही पूजा करती हूं." बहू के कहे अनुसार ससुर ने पूजा की तैयारी करवा दी। बहुएं नीमड़ी माता की पूजा करने लगीं। जब माँ निमड़ी पीछे हटी तो बहू हाथ जोड़कर विनती करने लगीं। हे नीमड़ी माता! तुम मुझसे पीछे क्यों हट गये, मुझसे क्या गलती हुई? बहू की करुण विनती सुनकर तीज माता ने कहा, "तुम्हारी सास ने कहा था कि जब मेरे बेटा होगा तो मैं सवामन में सत्तू चढ़ाऊंगी, लेकिन सात बेटे होने के बाद भी उन्होंने सत्तू नहीं चढ़ाया।" ।" बहू ने कहा, माँ, हमारी गलती माफ कर दो। मैं तुम्हें सत्तू खिलाऊंगा। कृपया मेरे छहों देवों को लौटा दीजिये और मुझे पूजा करने दीजिये। तीज माता नई दुल्हन की भक्ति और भक्ति देखकर प्रसन्न हुईं।

बहू ने नीमड़ी माता की पूजा की और चंद्रमा को अर्घ्य दिया। उसके पति ने सत्तू पासा और कल्पना उसके ससुर को दे दिया। बारात घर पहुंची, जैसे ही बहू ने घर में प्रवेश किया तो उसके छहों देवर आ गए। सास ने सबके घर में बड़े धूमधाम से प्रवेश किया, सास बहू के पैर पकड़ने लगी, तभी बहू बोली, सास आप यह क्या कर रही हैं? ? सत्तू ने कहा था, उसे याद करो। सास की याद आ गई। अगले वर्ष भाद्रपद माह में कजली तीज का व्रत आया, सवासत मान का सत्तू बनाकर नीमड़ी माता [तीज माता] को अर्पित किया। धूमधाम से नीमड़ी माता की विधिवत पूजा की गई।

हे नीमड़ी माता! जिस तरह सेठ के घर में खुशी होती है उसी तरह सबके घर में भी खुशी हो, बच्चों को अखंड सुख मिले और लंबी उम्र मिले।

[pdfinbox.com](http://pdfinbox.com)